रु. 7.00
ISBN 81-237-3896-X
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
मिट्टी का आदमी
वासिरेड्डी सीता देवी
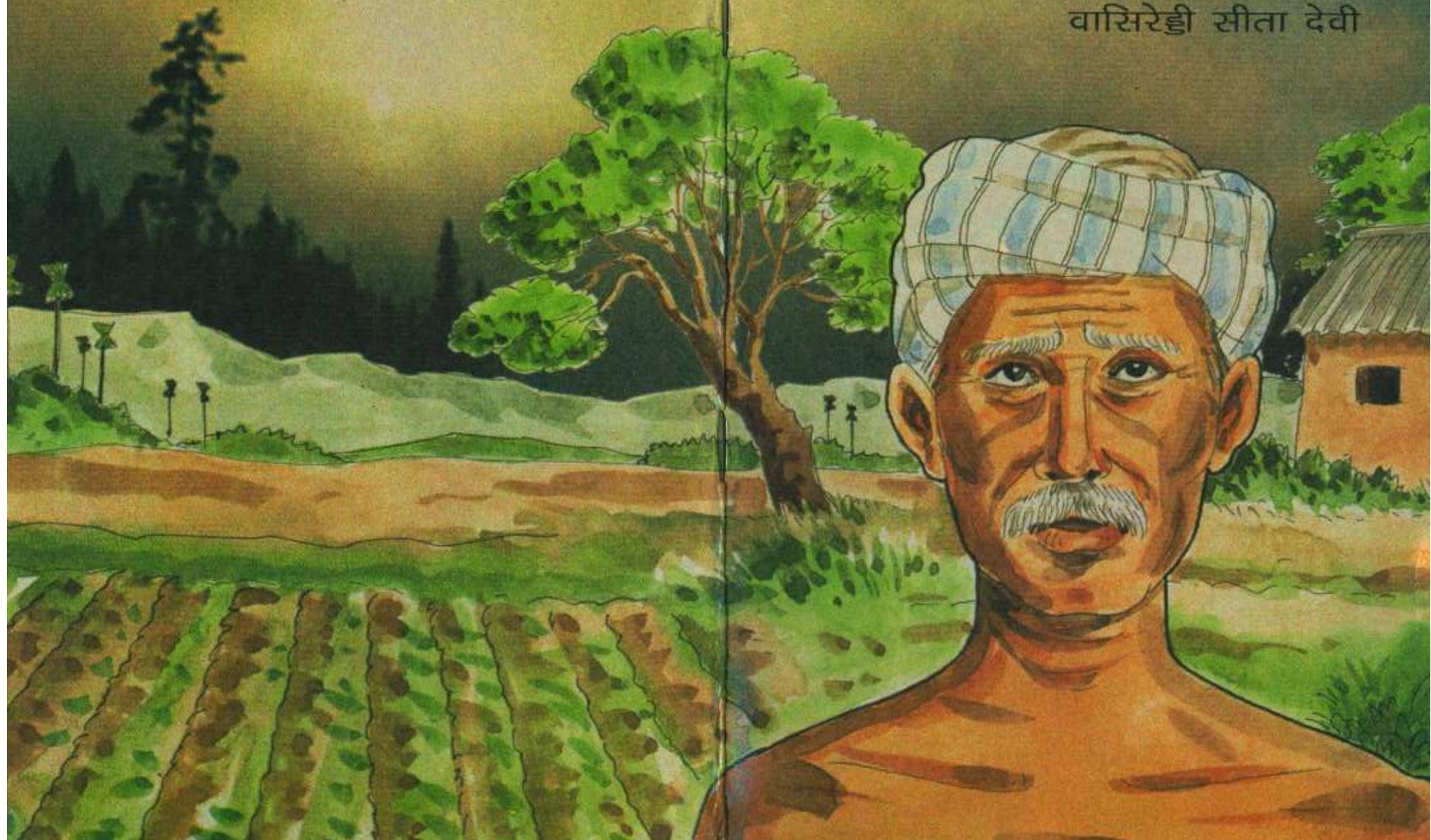
नवसाक्षर साहित्यमाला

मिट्टी का आदमी

वासिरेड्डी सीता देवी

रूपांतरण

जे. एल. रेड्डी

चित्रकार

संतोष गुप्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

यह पुस्तक के. के. बिड़ला फाउंडेशन के अनुदान से प्रकाशित की गई है।

ISBN 81-237-3896-X

पहला संस्करण : 2002 (*शक* 1924)

Mitti Ka Aadami (*Hindi*)

रु. 7.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

सांबय्या एक मेहनती किसान है। वह मिट्टी में पैदा हुआ और मिट्टी में ही पला है। जमाने से ही उसने सब सीखा है। धरती ही उसकी अक्षरपाटी है। हल उसकी खड़िया है। खेत उसकी पाठशाला है। धरती ने रोज एक सबक सिखाया तो उसने उसका धरती पर ही अभ्यास किया। उसके लिए मां, भगवान, गुरु सब धरती ही हैं। उसका पिता वेंकय्या कंगाली में पेट थामे फिरता हुआ उस गांव में आया था। पहले किसी के घर नौकर हुआ। कुछ समय बाद उसने बटाई पर कुछ जमीन ले ली। कड़ी मेहनत की। दस-बारह साल में उसने दो एकड़ जमीन खरीदी। फिर बेटा सांबय्या ने काम संभाल लिया।

जमीन पर ही भरोसा रखने वाले मेहनती सांबय्या ने फसल में बचत की। बेटा वेंकटपति के पैदा होने तक गांव के छोटे किसानों में उसकी गिनती होने लगी। वेंकटपति के शादी के लायक होते-होते

सांबय्या गांव का एक अमीर किसान बन गया। पसीना बहाकर मेहनत करने से ही धन पैदा होता है। सांबय्या ने अपने जीवन में मेहनत को ऊपर रखा। उसके लिए मेहनत ही पूंजी थी। यही सांबय्या की सोच थी।

अब सांबय्या की बड़ी इच्छा हुई कि वह उस परिवार में बेटे का रिश्ता करे, जिस परिवार में उसका पिता नौकर रहा था। जन्म से जमींदार बलरामय्या पिता की मृत्यु के समय दो सौ एकड़ उपजाऊ जमीन का मालिक था। उसने धन-दौलत के साथ-साथ अमीरों की खर्चीली आदतों को भी विरासत में पाया था। उसके चार बेटे और चार बेटियां थीं। चारों बेटों को शहर में पढ़ाया। हजारों रुपये खर्च किए। लेकिन कोई ठीक से पढ़ लिख नहीं सका। तीन बेटियों की शादी करके उनको ससुराल भेज दिया। उसमें भी बहुत पैसा खर्च हुआ। कर्जा भी हो गया।

बेटों में जायदाद बांटी तो बलरामय्या के हिस्से में अठारह एकड़ जमीन और मकान आया। इस तरह उसकी पुरानी जमींदारी खत्म हो गई। अभी चौथी लड़की वरूथिनी की शादी करनी थी। बाहर से

अच्छा-भला दिखाई देने पर भी उसका हाल सब ढोल का पोल था। उसका घमंड टूटा तो लाचारी में उसको अपनी चौथी बेटी वरूथिनी की शादी सांबय्या के बेटे वेंकटपति के साथ करनी पड़ी। समय का फेर! क्या करता!

शादी के समय जो दहेज देने का वादा किया था, वह बलरामय्या दे नहीं सका। सांबय्या दहेज के मामले में कोई रियायत नहीं चाहता था। इसलिए शादी के बाद तीन साल तक वरूथिनी पीहर में ही रही। अंत में जिस बिचौलिये ने यह शादी करवाई थी, उसकी सलाह मानकर वह बहू को घर ले आया।

वरूथिनी की परवरिश में और वेंकटपति की परवरिश में बहुत अंतर था। वरूथिनी जहां फिजूलखर्ची करने वाले परिवार में पली थी, वहां वेंकटपति एक-एक पैसे को दांत से पकड़ने वाले परिवार में पला था। इसके अलावा वरूथिनी वेंकटपति से ज्यादा होशियार, पढ़ी-लिखी और सुंदर थी। वह आराम पसंद भी थी।

सांबय्या को पहले हफ्ते में सब कुछ नया लगा। लगा कि बहू के आने से उसकी हैसियत बढ़ गयी है।

खाने-पीने का सुख भी बढ़ गया। लेकिन मुश्किल तब हुई जब काम में वेंकटपति की दिलचस्पी कम होने लगी और घर का खर्चा बढ़ गया। बहू अपने हाथ से कोई काम नहीं करती, सिर्फ फैशन करती है और बेटा बीवी का दीवाना हुआ है, जिससे वह हमेशा घर में रहता है, सांबय्या को इससे चिढ़ होती थी।

वरूथिनी गांव में खुश नहीं थी। इलाज वगैरह के लिए शहर आते-जाते उसे शहर अच्छा लगने लगा। वेंकटपति पर उसका रोब था ही। आखिरकार वरूथिनी की जचगी के बहाने दोनों गांव छोड़कर शहर चले गए और वहीं रहने लगे।

हमेशा 'मिट्टी का आदमी' बनकर जो खेत के आसरे जीता था। उसका बेटा बीवी के शौक पूरा करने के लिए शहर में जाकर बस गया। फिर वह धीरे-धीरे पिता की जायदाद को शहर ले जाने लगा। चींटी की तरह थोड़ा-थोड़ा करके जो जायदाद सांबय्या ने कमाई थी, उसको वेंकटपति अपनी जरूरतों के लिए बेचने लगा।

भोला वेंकटपति पत्नी की किसी बात के लिए न नहीं कर पाता था। एक बार वरूथिनी और वेंकटपति

फिल्म देखने गए। वहां सिनेमाघर के मैनेजर रामनाथ से उन दोनों की मुलाकात हुई।

वरूथिनी के घर रामनाथ का आना-जाना शुरू हो गया। चालाक रामनाथ शहर में पैसे कमाने के तरीके बताकर उन दोनों को लालच देता और वरूथिनी पर तीर चलाता। वरूथिनी और रामनाथ की बातें वेंकटपति की समझ में नहीं आती थीं। उसकी सारी सोच सौदों में होने वाले लाभ को लेकर ही होती थी। रामनाथ ने वरूथिनी को सुझाया कि वेंकटपति ने मकान बनाने के लिए शहर में जो जगह खरीदी है, उसमें सिनेमा हॉल बनवाने से खूब पैसा कमाया जा सकता है। तय किया गया कि रामनाथ का भी उसमें हिस्सा होगा।

सिनेमा हॉल बनवाने के लिए वरूथिनी ने वेंकटपति को गांव की जमीन बेचकर पैसे लाने गांव भेजा। लेकिन सांबय्या ने जमीन बेचने से साफ मना कर दिया। उसे शहरी लोगों के तौर-तरीके पसंद नहीं थे। वैसे वेंकटपति को भी शहर की जिंदगी रास नहीं आ रही थी। वह थियेटर-वियेटर के चक्कर में न पड़कर अपने गांव लौटना चाहता था।

लेकिन वरूथिनी को गांव लौटना कतई पसंद न था।

दो साल बीत गये। इधर रामनाथ परिवार का सगा बनकर वेंकटपति के घर में खूब आने-जाने लगा। जायदाद को बरबाद होते देखकर सांबय्या को लग रहा था जैसे अंदर कोई उसे आरी से चीर रहा है। वह कहता रहा कि "वेंकटपति का यहां कुछ नहीं है। यह सब मेरा अपना कमाया हुआ है।" लेकिन वेंकटपति पिता की जायदाद के आधे हिस्से पर अपने हक का दावा करता रहा।

रामनाथ समझ गया कि वरूथिनी वेंकटपति को अपने लायक नहीं समझती। इस बात का फायदा उठाते हुए वह वरूथिनी को अपने काबू में करने की कोशिश करता रहा। इस काम में उसे बहुत आसानी से सफलता मिली भी। वह धीरे-धीरे अपना सब कुछ रामनाथ के हाथों लुटाने लगी। रामनाथ ने वरूथिनी और वेंकटपति को शराब की आदत भी डलवा दी।

इधर गांव में सांबय्या यह सब देखकर कुढ़ता। उसने पसीना बहाकर जमीन कमाई थी। पसलियां गलाकर फसल उगाई थी। हमेशा जमीन पर भरोसा रखकर चला था। लेकिन अब वह सब बचता हुआ

नजर नहीं आ रहा था। फिर भी सांबय्या ने पक्का इरादा कर लिया कि चाहे जो हो, जमीन को वेंकटपति और वरूथिनी के हाथ लगने नहीं देगा।

इधर वेंकटपति, वरूथिनी और रामनाथ ने जब देखा कि सांबय्या सीधे तरीके से काबू नहीं आ रहा है, तो उन लोगों ने एक चाल चली। सख्त बीमार वेंकटपति को अस्पताल में दाखिल कराया गया है यह झूठी खबर देकर उन लोगों ने सांबय्या को शहर बुलवाया। वहां दो मुस्टंडों ने सांबय्या को एक कमरे में लाकर बंद कर दिया। बाद में सबने मिलकर गांव की जमीन के कागजों पर सांबय्या के अंगूठे का निशान लेकर जमीन बेच दी, ताकि शहर में सिनेमा हाल बन सके।

सात लाख रुपये में 'वरूथिनी पिक्चर पैलेस' बनकर खड़ा हो गया। आमदनी अच्छी होने लगी। लोगों ने कहा कि शहर भर में इतना बढ़िया कोई सिनेमा हाल नहीं है। अब वरूथिनी की हैसियत भी बढ़ गई। वह अपनी हैसियत के मुताबिक वेंकटपति के साथ एक नए मकान में रहने लगी। बेटा अंग्रेजी स्कूल में जाने लगा। घर में एक नौकरानी आ गई।

हाल को चलाने में रामनाथ वरूथिनी की मदद करता। इधर वेंकटपति शराब पी-पीकर निकम्मा होता गया। उधर रामनाथ और वरूथिनी की आपसी दोस्ती बढ़ती गई। वेंकटपति का शराबी होकर निकम्मा होते जाना वरूथिनी और रामनाथ दोनों के आपसी रिश्ते के लिए अच्छा रहा। रामनाथ वेंकटपति को शराब की कमी नहीं होने देता था।

कुछ समय बाद वरूथिनी खुद सिनेमा हाल का इंतजाम देखने लगी। फिर रामनाथ के साथ मिलकर एक सिनेमा हाल हैदराबाद में भी बनवाने की योजना
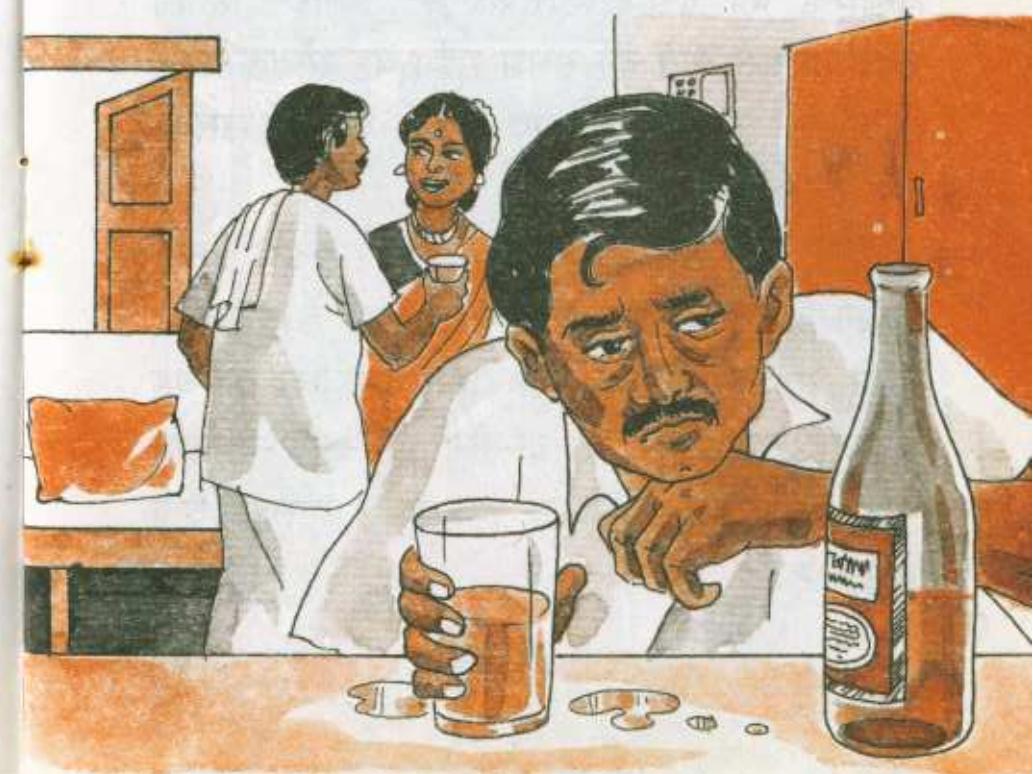
बनी। वरूथिनी और रामनाथ हैदराबाद के चक्कर लगाने लगे। दोनों हफ्ता-दस दिन वहीं रहते। बेचारे वेंकटपति को यह सब कुछ समझ में नहीं आता था। वह चुपचाप देखते रहने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकता था।

वरूथिनी ने हाल का काम अपने हाथ में ले लिया तो रामनाथ ने हाल पर पहले जैसा ध्यान देना छोड़ दिया। अपने निजी सिनेमा हाल में ही अधिक समय बिताने लगा। यह बात वरूथिनी को बुरी लगी। हाल के पास बहुत से आदमियों के बीच खड़ी बात करती वरूथिनी को देखकर उसका मूड बिगड़ने लगा। वरूथिनी इस बात को समझ गई। यह सोचकर उसे चिंता होने लगी कि रामनाथ से दूरी बढ़ने से उसको नुकसान हो सकता है।

एक दिन वरूथिनी ने देखा कि रामनाथ किसी जवान औरत के साथ कार में जा रहा है। पूछताछ करने पर पता चला कि वह किसी साहूकार की बहू है। वह समझ गई कि दो-तीन महीने से रामनाथ मुझसे जो खिंचा-खिंचा-सा रह रहा है, उसका यही कारण है।

बेचैनी के मारे वरूथिनी को नींद नहीं आ रही थी। उसे लगा, जगी रहेगी तो उसका सिर फट जाएगा। उसने शराब से अपनी बेचैनी मिटानी चाही। उठकर उसने सारी अलमारी छान मारी। वह 'दवाई' उसे नहीं मिली। इतने में उसे बाहरी गेट खोलकर अंदर आता वेंकटपति दिखाई पड़ा।

गुस्से में खड़ी पत्नी को देखकर वेंकटपति डर गया।

"हे भगवान! आज मर गये। आज यह जरूर शोर मचायेगी। आज की रात कटेगी नहीं।"
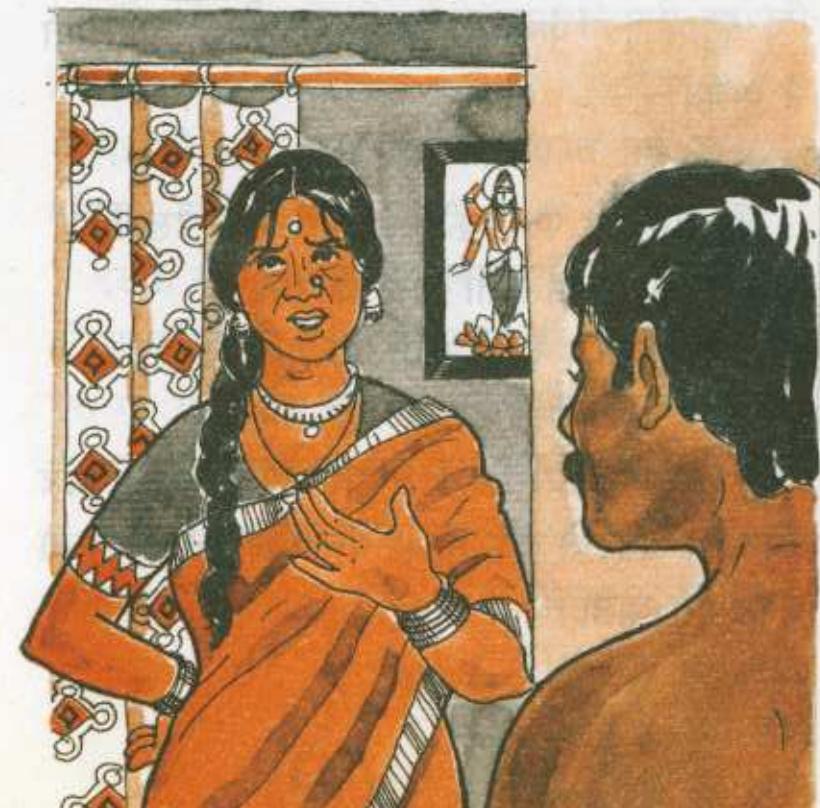
वरूथिनी ऐंठी रही। दूसरा महीना भी गया। लेकिन न रामनाथ आया न उसने पैसे ही भिजवाये। अब वरूथिनी से रहा नहीं गया। उसने वेंकटपति के जरिये हाल के मैनेजर शिवराम के पास संदेशा भिजवाया।

उसी दिन शाम को आने की बात कहकर शिवराम तीसरे दिन आया।

"तुम्हारा भी बड़ा मिजाज हो गया है, क्यों?" वरूथिनी ने ऐसे पूछा जैसे मुंह पर चपत लगा रही हो।

शिवराम कुछ बोला नहीं।

"पैसा कितना है?" वरूथिनी ने पूछा।

"इस महीने तो अभी डिस्ट्रिब्यूटरों का हिसाब भी नहीं किया है। वे लोग फोन पर फोन किये जा रहे हैं।"

"जो पैसा आया है, उसका क्या किया?"

"रामनाथ बाबू ही ले गये हैं।"

"जो बैंक में है, उसका क्या हुआ?"

"वह भी उन्होंने निकाल लिए है।"

"अब मुझे पांच हजार चाहिए। पिछले महीने भी

मैंने कुछ नहीं लिया।" गंभीर होकर वरूथिनी ने कहा।

"मैं क्या करूं?" जो था, सब रामनाथ बाबू ही ले गये।"

"मुझे बताये बगैर रामनाथ बाबू को क्यों दिया?"

शिवराम का चेहरा पीला पड़ गया। वह बोला—

"यह आज की बात तो है नहीं। जब से हाल बना है, तब से पैसे के मामले रामनाथ बाबू ही देख रहे हैं न? यह बात आपसे छिपी नहीं है।"

"तुम जानते हो न, कि आधा हिस्सा मेरा है?" वरूथिनी की आवाज में अधिकार बोल रहा था।

"आधा आपका है, या पूरा, इससे मुझे क्या लेना-देना? यह सब आप मालिक लोगों की आपसी बातें हैं।" शिवराम ने कहा।

इधर पता चला कि रामनाथ उस दूसरी औरत को मुट्ठी में करके हैरदाबाद में नये हाल के लिए उससे पैसा लगवा रहा है। वरूथिनी ने दगाबाज रामनाथ से अपना पिंड छुड़ाने का मन बना लिया।

एक दिन रामनाथ का साला रामकृष्णय्या अपने कुछ गुंडों के साथ आया और यह दावा करके कि वह

हाल उसकी बहन, यानी रामनाथ की पत्नी का है, जबर्दस्ती उस पर कब्जा कर लिया। हाल को कब्जे में लेने में खूब मारपीट भी हुई। वेंकटपति और वरूथिनी को भी चोटें आईं। यह सब देखकर वरूथिनी को लगा जैसे उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई हो।

इधर रामनाथ का अता-पता न था। वरूथिनी समझ गई कि यह सारा नाटक रामनाथ ही करा रहा है।

पुलिस से मदद मांगने बड़ी उम्मीद लेकर वरूथिनी डी.एस.पी. मोहनराव के पास गई। उसके सामने शिकायत की। मोहनराव ने बताया कि हाल रामकृष्णय्या की बहन का है, यह साबित करने के लिए रामकृष्णय्या के पास सबूत तक मौजूद हैं।

सुनकर वरूथिनी का चेहरा झुलस गया। देर तक उसके मुंह से बात नहीं निकली। धीरे-धीरे उसकी समझ में आ गया कि उसके भोलेपन का फायदा रामनाथ ने उठाया है। पैसा उसका लगाता रहा और हाल के दस्तावेज रामनाथ ने अपनी बीवी के नाम बनवा दिये थे।

वरूथिनी ने डी.एस.पी. मोहनराव से विनती की

कि अदालत में फैसला होने तक हाल पर उसे कब्जा दिलवाया जाय। चाहे गुंडे भेजकर ही सही वह अपना मकसद पूरा करना चाहती थी। मोहनराव ने मदद करने की हामी भरी।

अगले दिन रात को जोर की मारपीट के बाद वरूथिनी पिक्चर पैलेस फिर से वरूथिनी के कब्जे में आ गया। उस रात अपनी जीत से खुश होती और मोहनराव के प्रति एहसानमंद होती वह घर पहुंची, तो घर के सामने रुकी मोहनराव की कार को देखकर उसे अचरज हुआ।

मोहनराव उसके पास आकर खड़ा हो गया। वरूथिनी का जी धक-धक करने लगा। उसके पैर लड़खड़ाने लगे। उसने चुपचाप घर के अंदर की ओर कदम बढ़ाये। मोहनराव उसके पीछे-पीछे चलने गला। वरूथिनी ने इस आशा से अपने अंदर टटोलकर देखा कि मोहनराव को रोकने की ताकत, उसमें शायद कहीं बची हो। लेकिन उसने अपने को बेहद बेसहारा पाया।

मोहनराव का अपने मतलब से वरूथिनी के यहां आने-जाने का सिलसिला चलता रहा। वरूथिनी आस

लगाए रही कि शायद राव उसकी डूबती नैया को पार लगाएगा। उसने अपने को राव के हवाले कर दिया। मोहनराव ने ही हाल के मुकदमे के लिए वकील वगैरह तय किया और दिलासा दिया कि वह अपनी पूरी ताकत लगाकर उसकी जायदाद उसे दिलवाएगा। और रामनाथ और उसकी बीवी को जेल भिजवाएगा।

वकील शंकर राव कोई न कोई बहाना करके वरूथिनी से पैसा ऐंठता रहा। एक साल बीत गया। वरूथिनी का हजारों रुपया खर्च हो गया। वरूथिनी किराया बचाने के लिए एक छोटे से मकान में आ गयी।

वरूथिनी का बेटा अब हैदराबाद के जागीरदार स्कूल में चौथी कक्षा में आ गया था। हर महीने उसका खर्चा भेजना अब मुश्किल हो गया।

अदालत में जाने से पहले जिस शंकर राव ने यकीन दिलाया था कि छः महीने में फैसला हो जाएगा, वही अब ऐसे बात करने लगा जैसे छः साल भी लग सकते हों।

शंकर राव मुकदमे का जल्दी फैसला करा देगा, ऐसी आशा खत्म होने लगी। इससे वरूथिनी ने अपने

गांव के एक आदमी के कहने पर गुरुनाथम से वकालतनामा लेने की विनती की। गुरुनाथन भी एक ओछा आदमी निकला। वरूथिनी को लाचार समझकर वह उसके साथ सब तरह की आजादी लेने की कोशिश करने लगा। वरूथिनी ने उसे फटकार लगाकर घर से बाहर निकाल दिया।

इस बीच डी.एस.पी. मोहनराव का तबादला विशाखापट्टणम हो गया। सब तरफ से लाचार वरूथिनी मोहनराव से मिलने और उससे मदद मांगने विशाखापट्टणम गई। वहां वह एक होटल में रुकी। रात को होटल में पुलिस का छापा पड़ा। पुलिस के सिपाहियों के साथ मोहनराव भी था। होटल में धंधा करती औरतों को पकड़ने के लिए कमरों की तलाशी लेते-लेते मोहनराव वरूथिनी के कमरे में आ गया। वहां वरूथिनी को देखकर वह दंग रह गया।

मोहनराव को देखकर वरूथिनी का चेहरा खुशी और उम्मीद से चमक उठा। उसने मोहनराव से अपना सारा दुखड़ा कह सुनाया। विनती की कि अगले दिन उसके साथ चलकर उसके सारे मामले सुलझाए। लेकिन मोहनराव ने कोई बहाना करके

कहा कि वह उसके साथ चल नहीं सकता। वरूथिनी को निराश हुई। गुस्सा भी आया। गुस्से में उसने मोहनराव को खरी-खोटी भी सुनाई। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ।

जिसे वह शेर समझती थी, वह बकरी निकला। वरूथिनी की आंखों को मोहनराव एक कमजोर और डरपोक इन्सान दिखाई पड़ा।

वरूथिनी का मुकदमा खारिज हो गया और सिनेमा हाल पूरी तरह से रामनाथ की बीवी श्यामला के कब्जे में चला गया। वरूथिनी का खून खौलने लगा। उसमें बदले की भावना फनफनाने लगी। उसने अपना सब कुछ लगाकर रामनाथ का सफाया करने का मन बना लिया। उसने बचे-खुचे जेवर रामदास नामक आदमी को देकर यह काम करने के लिए भेजा।

वरूथिनी निचली अदालत के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील करने के लिए हैदराबाद गई। वहां बेटे के स्कूल में जाकर उसे अपने होटल में ले आई और एक दिन अपने साथ रखकर उस पर अपना प्यार बरसाती रही।

फिर गोपालराव नामक आदमी को बुलाकर रात

को होटल में मुकदमे के लिए वकील करने को लेकर बात करती रही। दोनों के बीच विलायती शराब के जाम भी चले। गोपाल राव ने वरूथिनी को हर तरह से मदद करने का भरोसा दिया।

इतने में फोन पर किसी ने खबर दी कि हैदराबाद आ रही फलाने नंबर की कार को रोककर उसमें बैठे हुए किसी आदमी का खून किया गया है। कार का नंबर रामनाथ की कार का था। सुनकर वरूथिनी को विश्वास हो गया कि उसके आदमी रामनाथ को मार डालने में कामयाब हो गए हैं।

उसकी आंखों के सामने रामनाथ के साथ बिताये अपने प्यार भरे जीवन की अनेक घटनाएं एक-एक करके घूमने लगीं। एक अजीब बेचैनी और उदासी उसे सताने लगी। इस बेचैनी और खालीपन के एहसास को दबाने के लिए वह जाम पर जाम पीती गई। उसके हाथ से गिरकर गिलास टूट गया। गिलास के टुकड़ों को देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगी जैसे उसका जीवन ही टूट-टूटकर बिखर गया हो।

उसको इस तरह बेहाल देखकर गोपालराव ने पूछा—"इसलिए दुखी हो रही हो न, कि मुकदमा

जीतने के बाद थियेटर का आधा वकील को देना पड़ेगा?"

"नहीं...मुझमें आधा, मेरा आधा..चला गया।" सूने में देखते हुए कुढ़कर वरूथिनी ने कहा।

वरूथिनी की आंखें मुंदती जा रही थीं। साग के डंठल की तरह उसका शरीर लटक गया। गोपालराव वहां से चला गया।

इधर वेंकटपति वरूथिनी का इंतजार कर-करके हैरान होता रहा। दस दिन बाद गोपालराव अपनी गाड़ी में वरूथिनी का शव लेकर वेंकटपति के घर पहुंचा। आकर उसने बताया कि जिस डाक्टर ने लाश की जांच की थी, उसने रिपोर्ट दी है कि ज्यादा पीने से दिल पर असर हो गया था और दिल का दौरा पड़ गया था।

"असल में इस सिनेमा हाल ने इसकी जान ले ली।" वेंकटपति ने दुखी होकर कहा।

श्मशान में सबके साथ रामनाथ भी पहुंचा। असल में वह मरा नहीं था। बात यह हुई थी कि जिस कार में रामनाथ को हैदराबाद जाना था, उसमें वह किसी वजह से जा नहीं सका तो उसका साला रामकृष्णय्या

उस कार में चला गया था। वरूथिनी के आदमियों ने उसी को रामनाथ समझकर उसकी हत्या कर दी थी।

वेंकटपति का जीवन सूना हो गया। गांव का एक मेहनती किसान शहर में आकर लुट-पिट गया था। उसका भविष्य अंधेरे से भर गया। अपना पेट चलाने या बेटे को पढ़ाने की उसकी ताकत अब नहीं थी। वह अपने बेटे रवि को स्कूल से घर ले आया। फिर रवि को लेकर अपने गांव की ओर चल पड़ा। बेटे को उसने गांव की सीमा तक पहुंचाया। फिर पिता सांबय्या के घर का रास्ता बताकर उसे गांव में भेज दिया। खुद जाने कहां खो गया। अपने पिता का सामना करने की हिम्मत उसमें नहीं थी।

रवि अपने दादा सांबय्या के घर जा पहुंचा। सांबय्या बड़े जीवट का आदमी था। उसने इस उम्र में भी हार नहीं मानी थी। मेहनत से अपने दाना-पानी का इंतजाम करके जी रहा था। रवि उसके बुढ़ापे की लाठी बनकर रहने लगा। दादा-पोते के दिलों में प्यार का ज्वार-सा उठता रहा।

एक दिन दादा के शरीर का पसीना रवि के गाल से लगा तो वह चिड़चिड़ा होने लगा। उसका सिर
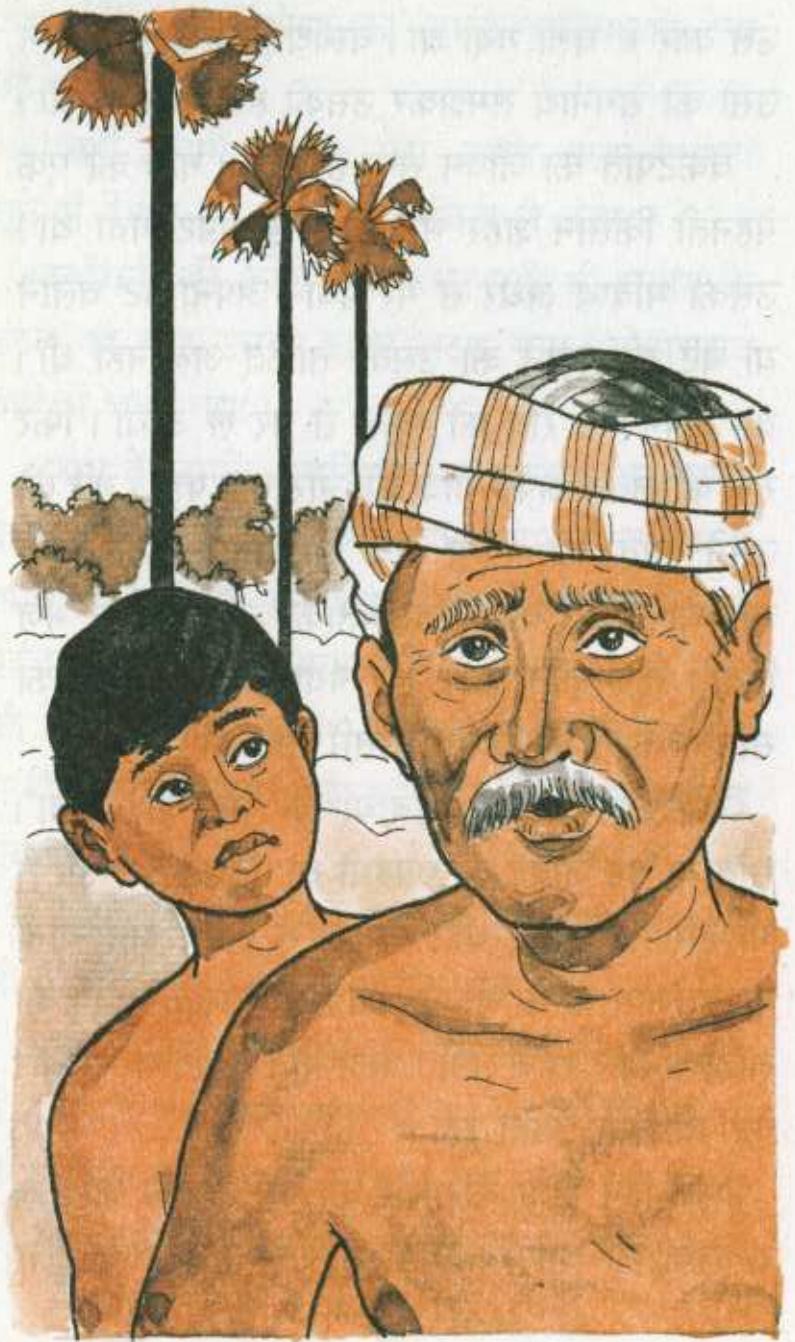
सहलाते हुए सांबय्या के हाथ की ओर उसने देखा।

"दादा तुम्हारे पूरे बदन में मिट्टी ही मिट्टी है।"

"मिट्टी में ही पैदा हुआ हूं।"

रवि ने सिर उठाकर दादा के चेहरे की ओर देखा।

"मिट्टी पर जीने वाला हूं।"

रवि ने आंखें गोल-गोल घुमाकर दादा की ओर एकटक देखा।

"बदन पर मिट्टी नहीं होगी तो क्या सोना होगा?"

"फिर तुम्हारे पास से बू जो आती है दादा?"

"मेरे पोते! वह पसीने की बू है। मिट्टी को पसीना बहुत पसंद है। इसीलिए जहां पसीना होता है, वहां मिट्टी होती है। यह बू धरती को अच्छी लगती है। तुम को अच्छी नहीं लगती?"

"तुम को अच्छी लगती है?" रवि ने उलटकर सवाल किया।

"पहले तुम बताओ। दादा ने पहले पूछा है न?"

"तुम को अच्छी लगती है तो मुझे भी अच्छी लगेगी।" रवि ने कहा।

रवि की बातों से जैसे सांबय्या के दिल में अमृत का छिड़काव हो गया। आंखों में आनंद के आंसू भर

गये। पोते का साथ मिला तो सांबय्या को जीने का सहारा मिल गया। वह दुनिया को ही भूल गया। रवि पर वह सारा प्यार उड़ेलने लगा।

सांबय्या रवि से कहता, "तुमको देखता हूं, तो मुझे भूख नहीं लगती। तुम खाओगे, तो मेरा पेट भर जाता है। अब तुम्हारे लिए जीऊंगा रे। मुझे अभी बहुत दिन जीना है।" सांबय्या इस तरह जोश से कहता जाता तो रवि हैरानी से देखता।

सांबय्या ने नई नहर के नीचे वाले बंजर में कुछ जमीन ले ली और उस उम्र में भी उसमें खेती करने लगा। रवि हर काम में जोश के साथ अपने दादा की मदद करता। उसने हल की मूंठ पकड़ना सीखा। खेती के तौर-तरीके समझे। सांबय्या को अपनी मेहनत पर हमेशा भरोसा रहा है। उसी भरोसे से अब उसने उस बंजर को भी खेती के लायक बना दिया।

एक दिन रामनाथ गांव में आया। उसने सांबय्या से कहा कि वह वरूथिनी का कर्जा उतारने के लिए रवि को शहर ले जाकर पढ़ाना चाहता है। रवि के भविष्य का ख्याल करके सांबय्या सहमत हो गया। लेकिन रवि ने अपने दादा को छोड़कर जाने से मना

कर दिया। मोह-माया का बंधन कितना मजबूत होता है, यह देखकर रामनाथ की आंखें गीली हो गयीं।

एक दिन रवि ने सांबय्या से पूछा, "दादा तुम पढ़े नहीं हो न? यह सब तुमने कहां से सीखा?"

"किसने बताया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं? और मैं स्कूल कभी नहीं गया?" मन ही मन मुस्कराते हुए दादा ने उलटकर पोते से सवाल किया।

"मैं जानता हूं। यह भी किसी को बताना पड़ेगा क्या?"

रवि ऐसे हंसा जैसे किसी ने गुदगुदाया हो।

"रवि! फिर सुनो। यह जमीन मेरी स्लेट है। हल ही मेरी खड़िया है। खेत ही मेरा स्कूल है। जमीन पर मैंने अभ्यास किया। इस जमीन ने ही रोज एक सबक मुझे सिखाया है। मेरी मां, मेरा गुरु, मेरा भगवान और मेरा सब कुछ यह जमीन ही है रे! अब बताओ मेरे पोते! तुम्हारा स्कूल बड़ा है या मेरा? तुम्हारी पढ़ाई बड़ी है या मेरी?"

सांबय्या की मेहनत सफल हुई। बंजर में भी फसल अच्छी हुई। फसल की कटाई के बाद एक दिन सांबय्या धान के गट्ठरों का चट्टा बना रहा था। रवि

भी धान के गट्ठर सिर पर रखकर ढो रहा था। सुनहरा रंग फैलाते धान के दाने सांबय्या के दिल में करोड़ों तारे बनकर चमक रहे थे।

धान के सैकड़ों गट्ठर आकर बनते चट्टे पर गिर रहे थे। चट्टा तेजी से ऊपर उठता जा रहा था। जैसे आकाश को छू रहा हो। नीचे धरती हंस रही थी।

ऐसे में ग्राम पंचायत का प्रधान कनकय्या पुलिस दल के साथ वहां आकर कहने लगा कि जिस बंजर में सांबय्या खेती करता रहा है, वह जमीन सरकार ने आजादी की लड़ाई में जेल गए हुए एक व्यक्ति को दे दी है और सांबय्या को उस जमीन और उसकी फसल से बेदखल कर दिया गया है।

सुनकर सांबय्या का दिमाग चकरा गया। "यह जमीन मेरी है। यह फसल मेरी है।" उसके कंठ से निकली आवाज दूर-दूर तक फैलने लगी। थका-हारा सांबय्या चक्कर खाकर चट्टे के ऊपर से जमीन पर गिर पड़ा। जड़ से टूटे पेड़ की तरह काली और गीली मिट्टी पर गिरे अपने दादा के पास रवि एक छलांग में पहुंच गया।

सांबय्या का मुंह मिट्टी में धंसा था। बाहें दोनों

फैलकर जमीन पर टिकी हुई थीं। मुट्ठियां कसी थीं। पैरों की उंगलियां जमीन में गड़ी थीं। सांबय्या को चित लिटाया गया, तो देखा कि सांबय्या के होठों ने जहां जमीन को छुआ था, वहां अन्न के दाने पड़े थे। उसके खुले मुंह में काली मिट्टी लाल खून में सनी हुई थी। आंखों के गड्ढों में मिट्टी थी। चेहरे भर में मिट्टी के पुते रहने से सांबय्या रवि को मिट्टी से बना आदमी लग रहा था।

रवि सांबय्या पर लेट गया। उसकी अकड़ी हुई उंगलियों को उसने खोला। सांबय्या के हाथ की मुट्ठी भर मिट्टी पोते के हाथ में आ गयी।

दादा की दी हुई मिट्टी ने पोते के होठों को छूकर

हौसला दिया। मिट्टी सने हाथों से उसने आंखें पोछ लीं।

सांबय्या की जमीन और फसल पर कब्जा करते हुए लोगों पर रवि टूट पड़ा। उसकी लाठी खाकर कनकय्या और दूसरे लोग घायल हो गए।

कनकय्या के कहने पर रवि को खतरनाक विद्रोही मानकर गिरफ्तार कर लिया गया। गुस्से में रवि जालसाज कनकय्या पर चिल्लाता रहा। "तेरे गांव को श्मशान बना डालूंगा। तेरे मकान में आग लगा दूंगा।"

रवि को पुलिस पकड़कर ले जा रही थी तो उसके कानों में बार-बार सांबय्या की यह आवाज गूंज रही थी–

"बेटे, यह जमीन तुम्हारी है। यह फसल तुम्हारी है।"

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित